मनोवैज्ञानिक अध्ययन दोहराए जा सकते हैं

मनोविज्ञान एक ऐसा विषय है जिसके बारे में कहा जाता है कि फिर से अध्ययन करने पर फिर से वही निष्कर्ष प्राप्त नहीं होते। पुनरावृत्ति न कर पाने का अर्थ या तो यह हो सकता है कि मूल अध्ययन में गड़बड़ थी, या नया प्रयोग ठीक से नहीं किया गया या फिर जिस निष्कर्ष की बात की जा रही है वह विभिन्न स्थितियों में या लोगों के विभिन्न समूहों के साथ अलग-अलग आता है। यदि ऐसा है तो मनोवैज्ञानिक अध्ययनों के निष्कर्ष अविश्वसनीय हो जाते हैं और एक अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों को सामान्य रूप से लागू नहीं किया जा सकता।

अब एक विशाल अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन में 13 मनोवैज्ञानिक अध्ययनों को दोहराने पर 10 में पहले जैसे ही निष्कर्ष मिले हैं। तीन अध्ययनों को दोहराया नहीं जा सका और निष्कर्षों की पुनरावृत्ति नहीं हुई। ये सारे अध्ययन सामाजिक-मनोविज्ञान के क्षेत्र से थे। इस प्रयास में 36 अनुसंधान समूहों ने मिलकर संयुक्त रूप से इन मनोवैज्ञानिक अध्ययनों को दोहराकर देखा।

36 अनुसंधान समूहों के उपरोक्त सम्मिलित दल ने पहले हो चुके प्रयोगों के परीक्षणों को मिलाकर एक सम्मिलित प्रश्नावली बनाई और इसे 12 देशों के 6344 वालंटीयर्स को करने को दिया। इन 13 अध्ययनों में वह अध्ययन भी शामिल था जिसका निष्कर्ष था कि लोग हानि से बचने के लिए ज़ोखिम उठाने को ज़्यादा तैयार होते हैं बजाय लाभ कमाने के लिए। इसी प्रकार से पूर्व में किए गए एक अध्ययन का निष्कर्ष था कि किसी व्यक्ति को जो पहली जानकारी मिलती है, वह ऐसे पूर्वाग्रह पैदा कर सकती जिनका असर बाद के निर्णयों पर होता है। उपरोक्त प्रोजेक्ट में इन अध्ययनों के निष्कर्षों को सही पाया गया।

इस संदर्भ में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के मनोवैज्ञानिक डैनी ओपनहाइमर का कहना है कि यह अध्ययन दर्शाता है कि मनोवैज्ञानिक निष्कर्ष उतने अविश्वसनीय भी नहीं है, जितना बताया जाता है। मगर साथ ही यह भी पता चलता है कि 13 में 10 निष्कर्ष ही ठीक थे। और यह भी नहीं कहा जा सकता कि हर 13 में से 10 निष्कर्ष ठीक ही निकलेंगे। ज़रूरत इस बात की है कि इस तरह के पुनरावृत्ति अध्ययन और किए जाएं।

जिन दो अध्ययनों के निष्कर्षों की पुष्टि नहीं हुई उनमें से एक यह था कि लोग किसी सामाजिक व्यवस्था का तब अनुमोदन कर देते हैं जब उनका सामना पैसे से होता है। इसी तरह का दूसरा अध्ययन यह बताता था कि अमरीकी झंडा देखने के बाद लोग ज़्यादा अनुदार मूल्यों को मानने लगते हैं। इन दोनों निष्कर्षों को दोहराया नहीं जा सका। तीसरे निष्कर्ष की पुष्टि भी ज़्यादा ज़ोरदार ढंग से नहीं हुई। ***(स्रोत फीचर्स)***